विषय - संस्कृत, बी० ए० स्नातक (प्रतिष्ठा)
द्वितीय वर्ष, तृतीय पत्र डॉ० ओम प्रकाश आर्य
कादम्बरी - शुकनासोपदेश महाराजा कॉलेज, आरा
गद्यांश व्याख्या दिनांक - 26/04/21

उदारसत्त्वममङ्गलमिव न बहु मन्यते। सुजनमनिमित्तमिव न पश्यति। अभिजातमहिमिव लङ्घयति। शूरं कण्टकमिव परिहरति। दातारं दुःस्वप्नमिव न स्मरति। विनीतं पातकिनमिव नोपसर्पति। मनस्विनमुन्मत्तमिवोपहसति।

अर्थ - (उदारसत्त्वममङ्गलमिव न बहु मन्यते) उदार हृदय (व्यक्ति) को मानो अशुभ समझकर बहुत नहीं मानती। (सुजनमनिमित्तमिव न पश्यति) सज्जन को मानो अपशकुन समझ कर नहीं देखती। (अभिजातमहिमिव लङ्घयति) कुलीन को मानो साँप समझकर

"Failure comes only when we forget our ideals and objectives and principles." - Jawaharlal Nehru

Scanned with CamScanner

Date __/__/____

Page No.: ______

लाँघ जाती है। (शूरं कण्टकमिव परिहरति) शूर को मानो काँटा समझकर छोड़ देती है (दातारं दुःस्वप्नम् इव न स्मरति) दानी को मानो बुरा स्वप्न समझकर स्मरण नहीं करती। (विनीतं पातकिनमिव नोपसर्पति) विनीत को मानो पापी समझकर उसके पास नहीं जाती। (मनस्विनम् उन्मत्तमिवोपहसति) मनस्वी को मानो पागल समझकर, उसका उपहास करती है।

टिप्पणी- विभिन्न समाजों में शुभ अवसरों पर कुछ वस्तुओं का दर्शन अपशकुन माना जाता है, अतः इन अशुभ वस्तुओं के दर्शन का परिहार किया जाता है। यथा- यात्रा के समय में गर्भिणी, बाँझ व विधवा स्त्री, चमड़ा, भूसा, हड्डी आदि का दिखना अशुभ मानते हैं। 'मुहूर्तचिन्तामणि' आदि ज्योतिष के ग्रन्थों में भी निमित्तों पर बहुत विचार किया गया है। बाण ने भी अपने दोनों गद्य काव्यों में प्रसंगवश कई स्थलों पर अनेक निमित्तों की परिगणना की है।

लक्ष्मी का गुणी व्यक्तियों से स्वाभाविक विरोध है। विद्वान् की भाँति ही वह अन्य गुणों से युक्त व्यक्तियों से भी दूर रहती है। इसी तथ्य का प्रतिपादन कवि ने उत्प्रेक्षा-माला द्वारा अत्यन्त प्रभावी रूप से किया है। अतः लक्ष्मी के सम्बन्ध में कवियों की अनेक उत्प्रेक्षाएँ हैं- 'गुणिनं जनमालोक्य निजबन्धनशङ्कया राजलक्ष्मीः कुरङ्गीव दूरं दूरं पलायते।' 'अत्यार्यमतिदातारम- तिशूरमतिव्रतम्। प्रज्ञाभिमानिनं चैव श्रीर्भयान्नोपसर्पति'॥

"The butterfly counts not months but moments, and has time enough." —Rabindranath Tagore

Date ___/___/______ Page No.: ______

<u>पदव्याख्या</u> – उदारसत्त्वम् = उदारं सत्त्वं यस्य सः (बहु०) तम्। सुजनम् = शोभनं जन्म यस्य सः (बहु०) तम्।
अभिजातम् = प्रशस्तं जातं यस्य सः अभिजातः (बहु०) तम्, अभि + जन् + क्त द्वि० ए०।
लङ्घयति = लङ्घ् + लट् प्र० पु० ए०। परिहरति = परि + हृ + लट् प्र० पु० ए०। दातारम् = दा + शतृ द्विती० ए०। दुःस्वप्नम् = दुष्टः स्वप्नः दुःस्वप्नः (प्रादि तत्पु०) तम्। विनीतम् = वि + नी + क्त द्विती० ए०।
पातकिनम् = पातक + इन् द्विती० ए०।
उपसर्पति = उप + सृप् + लट् प्र० पु० ए०।
मनस्विनम् = प्रशस्तं मनः यस्य सः (बहु०) तम्, मनस् + विन् द्विती० ए०। ॥इति॥

Scanned with CamScanner